विदेश यात्रा : ज्योतिषीय विश्लेषण

डॉ. सुशील अग्रवाल
निदेशक डॉ. सुरेश आत्रेय

विदेश का शाब्दिक अर्थ है जन्मभूमि से दूर। विदेश गमन को प्राचीन समय में अशुभ माना जाता था। समय के साथ-साथ परिभाषा बदली और विदेश जाने को सौभाग्य माना जाने लगा। गत कुछ वर्षों से भारत में भी भरपूर पढ़ाई और आजीविका के अवसर मिलने से लोग पढ़ाई या कुछ वर्षों की नौकरी के पश्चात् स्वदेश लौटने लग गए हैं। आजकल लोग छुट्टियों के लिए, परिवार के सदस्यों से मिलने या सेमिनार आदि में भाग लेने के लिए भी विदेश जाने लगे हैं। विभिन्न उद्देश्यों से की जाने वाली विदेश यात्रा को जन्मकुंडली में किस प्रकार से देखा जाय, यही इस लेख का विषय है।

धनागमन की दिशा और देश

मन्त्रेश्वर जी ने कर्माजीव प्रकरण में कहा है:

अंशेशे बलवत्यत्यत्नसम्प्राप्तिं बलोनेशपे
स्वल्पं प्रोक्तफलं भवेदुदयतः कर्मर्क्षदेशे फलम् ।
अंशस्योक्तदिशं वदेत्पतियुते दृष्टे स्वदेशे फलं
सत्यन्यैः परदेशजं तदधिपस्यांशे स्वदेशे स्थिरे।।

दशमेश का नवांशेश यदि बलवान हो तो धनागमन आसानी से होता है, किन्तु यदि निर्बल हो तो कम धन की प्राप्ति होती है। किस देश और दिशा में धन की प्राप्ति होगी :

- दशम भाव की राशि से व्यक्त होने वाली दिशा और देश।
- दशमेश के नवांशेश की राशि से व्यक्त होने वाली दिशा और देश।

यदि उपरोक्त राशि या नवांश राशि अपने स्वामी से युत या दृष्ट हो तो जातक अपने देश में ही धनार्जन करता है। इसी प्रकार दशमेश यदि स्थिर नवांश में हो तो भी जातक अपने देश में धनार्जन करता है। यदि स्वामी की युति या दृष्टि के अतिरिक्त अन्य ग्रहों की युति या दृष्टि भी हो तो विदेश में भाग्योदय कहा गया है।

विदेश यात्रा सम्बन्धित भाव

लग्न : लग्न-लग्नेश बली होंगे तो जातक अपनी इच्छाएं पूर्ण करने में सक्षम होगा।

तृतीय भाव : यह छोटी-छोटी यात्राओं का भाव है। चतुर्थ का द्वादश होने से यह भाव जन्मस्थान-च्युति का भी प्रतिनिधित्व करता है।

चतुर्थ भाव : यह भाव घर/निवास का है। विदेश जाने के लिए चतुर्थ भाव/भावेश पर पीड़ा होती है जिससे जातक जन्मस्थल छोड़ कर अन्यत्र निवास करता है।

पंचम भाव : कॉलेज के पढाई के अतिरिक्त यह भाव नवम का नवम भी है।

सप्तम भाव : लग्न से सबसे अधिक दूरी पर स्थित यह भाव व्यवसाय सम्बंधित यात्राओं के लिए विचारणीय होता है।

अष्टम भाव : यह भाव देश निकाला या निर्वासन का प्रतिनिधित्व करता है।

नवम भाव : यह भाव भाग्य, उच्च शिक्षा और लम्बी दूरी की यात्रा के लिए देखा जाता है।

दशम भाव : आजीविका सम्बंधित यात्रा के लिए दशम/दशमेश का सम्बन्ध भी आता है।

एकादश भाव : यह भाव इच्छा पूर्ति और हवाई यात्रा का भाव है।

द्वादश भाव : यह विदेश से सम्बंधित सभी चीजों के लिए मुख्य भाव माना जाता है।

विदेश यात्रा सम्बंधित राशि

कुछ विद्वानों के मतानुसार लग्न में चर (मेष, कर्क, तुला, मकर) राशि हो और लग्नेश एवं भाग्येश चर राशिगत हो तो विदेश में भाग्योदय होता है।

विदेश यात्रा सम्बंधित ग्रह

राहु और शनि को विदेश यात्रा का कारक ग्रह कहा गया है। शुक्र और चन्द्र शौकीन यात्रा के कारक ग्रह हैं। विदेश यात्रा विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की जाती है इसीलिए इसमें ग्रहों के नैसर्गिक प्रभाव के साथ-साथ भावेशों का भी पूर्ण योगदान होता है।

विदेश में स्थायी वास के योग

विदेश में स्थायी निवास के निम्न योग होते हैं :

- शम्भु होराप्रकाश के अनुसार यदि मंगल एवं शनि की युति पंचम, अष्टम या द्वादश में हो तो एक प्रकार का केमद्रुम योग निर्मित होता है जिसमें जातक को अपनी जन्मभूमि छोड़नी पड़ती है।
- चतुर्थ-चतुर्थेश पीड़ित हों तो जन्मभूमि का सुख नहीं मिलता। कुंडली में यदि विदेश के अन्य योग हों परन्तु चतुर्थ-चतुर्थेश बलवान हो या शुभ प्रभावित हों तो जातक कुछ वर्ष विदेश वास के पश्चात स्वदेश लौट आता है या फिर कुछ वर्षों के लिए स्वदेश लौट कर पुनः विदेश जाता है।
- विदेश भाव के लिए द्वादश-द्वादशेश बली होने चाहिए और यदि लग्नेश का भी सम्बन्ध द्वादश-द्वादशेश से हो तो योग प्रबल होता है।
- राहु-केतु का भी विदेश सम्बंधित भावों से सम्बन्ध महत्वपूर्ण होता है।
- लग्नेश यदि सप्तमस्थ हो और शुभ ग्रह से सम्बंधित हो तो जातक विदेश वास करता है।
- अष्टम भाव को निर्वासन का भाव भी माना जाता है इसीलिए अष्टम-अष्टमेश और द्वादश-द्वादशेश का सम्बन्ध भी विदेश वास करवाता है।
- लग्नेश एवं चतुर्थेश का द्वादशस्थ होना या परस्पर सम्बन्ध होने से जातक जन्मभूमि पर वास नहीं कर पाता है। द्वादशेश यदि चतुर्थ में हो तो जातक या तो अपने देश वापिस आता है या फिर अपने देश में ही निवास करता है।
- नवम-नवमेश का द्वादश-द्वादशेश से सम्बन्ध विदेश में भाग्योदय करता है।
- लग्नेश-द्वादशेश, नवमेश-द्वादशेश या चतुर्थेश-द्वादशेश का भाव परिवर्तन या परस्पर प्रगाढ़ सम्बन्ध विदेश वास करवाता है।
- द्वादश भाव का बुध भी विदेश वास देता है।
- विदेश में सफलतापूर्वक स्थायी वास के लिए लग्न-लग्नेश का बली होना आवश्यक घटक है।
- शुक्र या चन्द्रमा के सप्तमस्थ होने से जातक विदेश में रहता है या अत्यधिक यात्राएँ करता है।

- यदि सभी ग्रहों की स्थिति लग्न, सप्तम और द्वादश में हो तो भी विदेश में वास करने की सम्भावना अधिक होती है।

अन्य उद्देश्यों के लिए विदेश जाने के योग

विदेश जाने के विभिन्न उद्देश्य होते हैं, जैसे पढाई के लिए, नौकरी के लिए या फिर सैर-सपाटे के लिए। इनके योग निम्न हैं :

- चतुर्थ भाव का सूर्य एक सम्मानजनक व्यवसाय एवं विदेश में वास देता है।
- जातक पारिजात के अनुसार सूर्य यदि पंचम में हो तो जातक राजदूत बनकर विदेश जाता है।
- सारावली के अनुसार सूर्य यदि अष्टमस्थ हो तो जातक देश-विदेश की यात्राएँ करता है।
- पाराशर जी के अनुसार सूर्य से षष्ठम अथवा द्वादश में केतु हो तो सूर्य/केतु में जातक विदेश यात्रा करता है।
- जातकतत्त्वम के अनुसार चन्द्रमा केंद्र में हो तो जातक देश-विदेश की काफी यात्राएँ करता है।
- चन्द्रमा का द्वादश में उच्चस्थ होना विदेश में स्थायी वास देता है।
- पाराशर जी के अनुसार चन्द्रमा के शुक्र से 6, 8, 12 होने से विदेश गमन होता है।
- मेष राशि का शुक्र विदेश यात्रा देता है।
- मंगल-शुक्र या शनि-शुक्र की युति भी विदेश गमन करवाती है।
- चतुर्थ/चतुर्थेश या पंचम/पंचमेश का द्वादश/द्वादशेश से सम्बन्ध हो तो जातक पढ़ाई के लिए विदेश जाता है। यदि नवम / नवमेश का भी सम्बन्ध हो जाय तो विदेश में पढ़ाई का योग अधिक प्रबल हो जाता है।
- चतुर्थ-चतुर्थेश भाव पर पीड़ा विदेश जाने के योगों की पुष्टि करता है।
- यदि दशम / दशमेश का सम्बन्ध द्वादश-द्वादशेश से हो तो आजीविका सम्बंधित यात्रा होती है। यदि षष्ठम / षष्ठेश का सम्बन्ध साथ हो जाय तो विदेश में नौकरी की सम्भावना प्रबल हो जाती है।
- दशम में स्थित बुध और चतुर्थ में स्थित चन्द्रमा विदेश यात्राएँ देता है।
- चतुर्थ का बुध बार-बार घर बदलवाता है।

विदेश यात्रा का समय

यदि जन्मकुंडली में विदेश यात्रा के योग उपस्थित हैं तो निम्न अवधि में जातक विदेश जाता है:

- सूर्य, चन्द्र, मंगल और गुरु यदि उच्चस्थ हो तो उनकी दशा/अन्तर्दशा में।
- सूर्य की महादशा में अगर किसी उच्च ग्रह की अन्तर्दशा हो।
- सूर्य/केतु, केतु/सूर्य, राहु/राहु, राहु/केतु, शनि/राहु, राहु/शनि, शनि/गुरु या राहु/गुरु में।
- मंगल की दशा में यदि मंगल बली होकर लग्न में स्थित हो और सूर्य से सम्बंधित हो।
- नवम या द्वादश भाव से सम्बंधित ग्रहों की दशा/अन्तर्दशा में।
- नवमेश या द्वादशेश की दशा/अन्तर्दशा में।
- लग्नेश या चन्द्रमा से योग करने वाले ग्रहों की दशा/अन्तर्दशा में।
- जब गुरु नवम/नवमेश या द्वादश/द्वादशेश पर गोचर करे या दृष्टि दे।
- जब गोचरवश शनि जन्मकुंडली के सूर्य पर हो।
- चन्द्र या शुक्र की दशा/अन्तर्दशा में जातक घूमने-फिरने या छुट्टियाँ मनाने आदि आनंद के लिए विदेश जाते हैं।

उदाहरण

उदाहरण-1:

1. 14.11.1989, 23:00, इलाहाबाद।

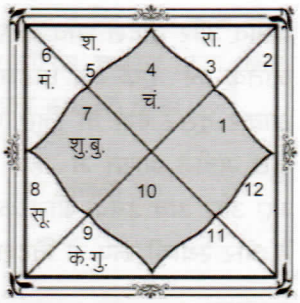

प. नेहरु की जन्मकुंडली में लग्न-लग्नेश बली है, द्वादश-द्वादशेश मिश्रित प्रभाव के कारण बली नहीं है, चतुर्थेश-द्वादशेश की युति चतुर्थ भाव में है, चतुर्थ भाव पाप कर्तरी के अतिरिक्त शनि से पीड़ित भी है परन्तु चतुर्थेश के चतुर्थ में स्वगृही एवं शुभ युक्त होने के कारण नेहरु जी पढ़ाई के बाद स्वदेश भी लौटे। जातक पारिजात में वर्णित पंचम के सूर्य ने नेहरु जी को देश का प्रतिनिधित्व करते हुए विदेश यात्राएँ भी करवायीं।

उदाहरण- 2:

नवमेश-द्वादशेश की सप्तम में युति और पंचमेश के द्वादशस्थ होने से विदेश में पढाई के योग हैं। इसके अतिरिक्त द्वादशेश शनि का नवम एवं नवमेश से सम्बन्ध है, द्वादश भाव बली है, चतुर्थ भाव राहु एवं सूर्य से पीड़ित है और द्वादशेश शनि का चतुर्थ एवं लग्न पर प्रभाव है। चन्द्रमा और शुक्र भी परस्पर 2/12 हैं। राहु-शनि-राहु में जातक पढ़ाई के लिए विदेश गया। इस कुंडली में विदेश योगों के अतिरिक्त विदेश के दोनों कारक ग्रहों शनि और राहु का भी अधिक प्रभाव है।

2. 07.01.1982, 11:45, हैदराबाद

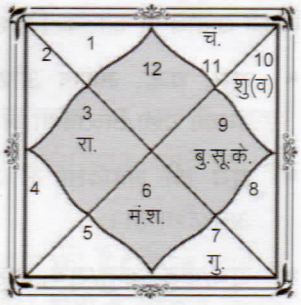

उदाहरण- 3:

लग्न एवं सप्तम स्पष्ट रूप से विदेश कारक शनि एवं राहु के प्रभाव में है, नवमेश शनि का प्रभाव पंचमेश-द्वादशेश शुक्र पर है, द्वादश भाव चन्द्र एवं निर्बल गुरु से दृष्ट होकर औसत है, मंगल एवं सूर्य से चतुर्थेश पीड़ित है और चतुर्थ पर निर्बल गुरु की दृष्टि भी है। जातक 1991-1992 के आसपास, कॉलेज की शिक्षा के लिए विदेश गए। चतुर्थ भाव पर गुरु के कुछ प्रभाव और द्वादश भाव के स्पष्ट बली न होने के कारण जातक को एक देश छोड़ना पड़ा और 2016 में भारत आकर दूसरे देश के लिए पुनः वीजा लेना पड़ा परन्तु कुछ महीने भारत में रहने के पश्चात फिर विदेश चले गए और अब उनके ग्रीन कार्ड को भी मंजूरी मिल गयी है और स्थायी रूप से विदेश में ही रहने के इच्छुक हैं।

3. 07.08.1973, 02:30, दिल्ली

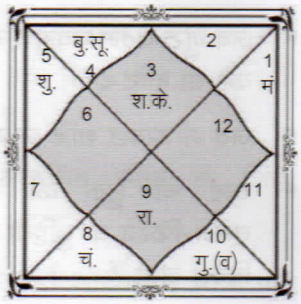

उदाहरण-4:

चतुर्थेश-पंचमेश की द्वादश भाव में युति के कारण जातक ने विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त की परन्तु चतुर्थ में राहु के बली होने, चतुर्थ का शुभकर्तरी आदि होने से जातक स्वदेश लौटे। चन्द्रमा और शुक्र के 6/8 होने से जातक ने स्वदेश लौटने के पश्चात भी बहुत विदेश यात्राएँ कीं।

4. 12.02.1965, 07:30, आगरा

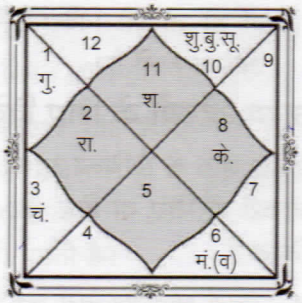

उदाहरण-5 :

यह जातिका नौकरी के लिए विदेश जाकर स्थायी रूप से वहीं बस गयी। लग्नेश की बली होकर द्वादश में स्थिति विदेश में स्थायी निवास का एक प्रबल योग है। नवमेश-दशमेश की युति सप्तम में है जो शादी के बाद भाग्योदय दर्शा रहा है। शुक्र-शनि की युति का प्रभाव भी द्वादश पर है। जातिका को शादी के बाद ही विदेश में नौकरी मिली। जातिका को विदेशी नागरिकता प्राप्त है।

5. 24.06.1971, 19:15, दिल्ली

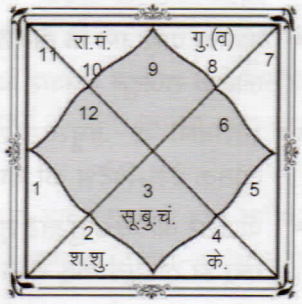

उदाहरण-6 :

दशमेश और षष्ठेश/नवमेश की द्वादश में युति से विदेश में नौकरी एवं भाग्योदय होने के योग हैं। इसके अतिरिक्त लग्न पर मिश्रित प्रभाव है, लग्न का राहु-शनि से सम्बन्ध है, चतुर्थेश पाप ग्रहों से पीड़ित है और द्वादश भाव बली है। इस जातक का सम्पूर्ण परिवार विदेश में है। इन्होंने पढ़ाई भारत में की और यहाँ घर भी है परन्तु बाद में नौकरी के लिए विदेश गए और अब विदेशी नागरिकता के साथ स्थायी निवासी हैं।

6. 02.02.1963, 06:15, दिल्ली

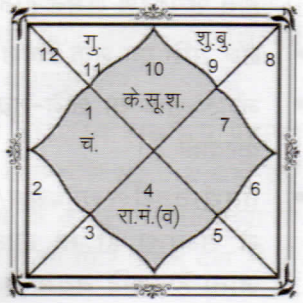

निष्कर्ष : जन्मकुंडली में उपरोक्त वर्णित योगों के अतिरिक्त नवांश से और सम्बंधित वर्ग से जन्मकुंडली के योगों की पुष्टि की जानी चाहिए। ग्रह और भावेशों के बल से फलों में न्यूनाधिकता आती है। उचित दशा और गोचर से जन्मकुंडली के फल प्राप्त होने की अवधि निर्धारित होती है। ❐